بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

یٰسٓ ۚ ﴿۱﴾ وَ الۡقُرۡاٰنِ الۡحَکِیۡمِ ۙ﴿۲﴾ اِنَّکَ لَمِنَ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ۙ﴿۳﴾ عَلٰی صِرَاطٍ

हिक्मत वाले कुरआन की क़सम बेशक तुम[2] सीधी राह पर

مُّسۡتَقِیۡمٍ ؕ﴿۴﴾ تَنۡزِیۡلَ الۡعَزِیۡزِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۵﴾ لِتُنۡذِرَ قَوۡمًا مَّاۤ اُنۡذِرَ

भेजे गए हो[3] इ़ज़्ज़त वाले मेहरबान का उतारा हुवा ताकि तुम उस क़ौम को डर सुनाओ

اٰبَآؤُہُمۡ فَہُمۡ غٰفِلُوۡنَ ﴿۶﴾ لَقَدۡ حَقَّ الۡقَوۡلُ عَلٰۤی اَکۡثَرِہِمۡ فَہُمۡ لَا

जिस के बाप दादा न डराए गए[4] तो वोह बे ख़बर हैं बेशक उन में अक्सर पर बात साबित हो चुकी है[5] तो वोह

یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۷﴾ اِنَّا جَعَلۡنَا فِیۡۤ اَعۡنَاقِہِمۡ اَغۡلٰلًا فَہِیَ اِلَی الۡاَذۡقَانِ فَہُمۡ

ईमान न लाएंगे[6] हम ने उन की गरदनों में तौक़ कर दिये हैं कि वोह ठोड़ियों तक हैं तो येह अब ऊपर को

مُّقۡمَحُوۡنَ ﴿۸﴾ وَ جَعَلۡنَا مِنۡۢ بَیۡنِ اَیۡدِیۡہِمۡ سَدًّا وَّ مِنۡ خَلۡفِہِمۡ سَدًّا

मुंह उठाए रह गए[7] और हम ने उन के आगे दीवार बना दी और उन के पीछे एक दीवार

1 : सूरए ''यासीन'' मक्किय्या है, इस में पांच रुकूअ़, तिरासी आयतें, सात सो उन्तीस कलिमे, तीन ह़ज़ार हुरूफ़ हैं। तिरमिज़ी की ह़दीस शरीफ़ में है कि हर चीज़ के लिये क़ल्ब है और कुरआन का क़ल्ब ''यासीन'' है और जिस ने ''यासीन'' पढ़ी अल्लाह तआ़ला उस के लिये दस बार कुरआन पढ़ने का सवाब लिखता है। येह ह़दीस ग़रीब है और इस की अस्नाद में एक रावी मज्हूल है। अबू दावूद की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने अम्वात पर ''यासीन'' पढ़ो। इसी लिये क़रीबे मौत ह़ालते नज़्अ़ में मरने वालों के पास ''यासीन'' पढ़ी जाती है। **2 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **3 :** जो मन्ज़िले मक़्सूद को पहुंचाने वाली है, येह राह तौह़ीदो हिदायत की राह है। तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام इसी राह पर रहे हैं। इस आयत में कुफ़्फ़ार का रद है जो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहते थे ''لَسْتَ مُرْسَلًا'' तुम रसूल नहीं हो। इस के बा'द कुरआने करीम की निस्बत इर्शाद फ़रमाया **4 :** या'नी उन के पास कोई नबी न पहुंचे और क़ौमे कुरैश का येही ह़ाल है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से पहले उन में कोई रसूल नहीं आया **5 :** या'नी हुक्मे इलाही व क़ज़ाए अज़ली उन के अ़ज़ाब पर जारी हो चुकी है और अल्लाह तआ़ला का इर्शाद ''لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ'' उन के ह़क़ में साबित हो चुका है और अ़ज़ाब का उन के लिये मुक़र्रर हो जाना इस सबब से है कि वोह कुफ़्र व इन्कार पर अपने इख़्तियार से मुसिर रहने वाले हैं। **6 :** इस के बा'द उन के कुफ़्र में पुख़्ता होने की एक तम्सील इर्शाद फ़रमाई **7 :** येह तम्सील है उन के कुफ़्र में ऐसे रासिख़ होने की कि आयात व नज़्र, पन्दो हिदायत किसी से वोह मुन्तफ़ेअ़ नहीं हो सकते जैसे कि वोह शख़्स जिन की गरदनों में ग़िल की क़िस्म का त़ौक़ पड़ा हो जो ठोड़ी तक पहुंचता है और इस की वज्ह से वोह सर नहीं झुका सकते येही ह़ाल उन का है कि किसी त़रह़ उन को ह़क़ की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं होता और उस के हुज़ूर सर नहीं झुकाते। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि येह उन की ह़क़ीक़ते ह़ाल है जहन्नम में उन्हें इसी त़रह़ का अ़ज़ाब किया जाएगा जैसा की दूसरी आयत में अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया ''اِذِ الْاَغْلٰلُ فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ'' **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जहल और उस के दो मख़्ज़ूमी दोस्तों के ह़क़ में नाज़िल हुई। अबू जहल ने क़सम खाई कि अगर वोह सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को नमाज़ पढ़ते देखेगा तो पथ्थर से सर कुचल डालेगा। जब उस ने हुज़ूर को नमाज़ पढ़ते देखा तो वोह इसी इरादए फ़ासिदा से एक भारी पथ्थर ले कर आया, जब उस पथ्थर को उठाया तो उस के हाथ गरदन में चिपके रह गए और पथ्थर हाथ को लिपट गया, येह ह़ाल देख कर अपने दोस्तों की त़रफ़ वापस हुवा और उन से वाक़िआ़ बयान किया तो उस के दोस्त वलीद बिन मुग़ीरा ने कहा कि येह काम मैं करूंगा और मैं उन का सर कुचल कर ही आऊंगा। चुनान्चे वोह पथ्थर ले कर आया, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अभी नमाज़ ही पढ़ रहे थे, जब येह क़रीब पहुंचा तो अल्लाह तआ़ला ने उस की बीनाई सल्ब कर ली, हुज़ूर की आवाज़ सुनता था आंखों से नहीं देख सकता था

www.dawateislami.net

فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۹﴾ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ

और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो उन्हें कुछ नहीं सूझता[8] और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न

تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰﴾ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِیَ

डराओ वोह ईमान लाने के नहीं तुम तो उसी को डर सुनाते हो[9] जो नसीह़त पर चले और रह़मान से

الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ﴿۱۱﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ

बे देखे डरे तो उसे बख़्शिश और इ़ज़्ज़त के सवाब की बिशारत दो[10] बेशक हम मुर्दों को जिलाएं (ज़िन्दा करें)

الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۣؕ وَكُلَّ شَیْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِیْۤ اِمَامٍ

وقف غفران

गे और हम लिख रहे हैं जो उन्हों ने आगे भेजा[11] और जो निशानियां पीछे छोड़ गए[12] और हर चीज़ हम ने गिन रखी है एक बताने

येह भी परेशान हो कर अपने यारों की त़रफ़ लौटा वोह भी नज़र न आए, उन्हों ने ही उसे पुकारा और उस से कहा : तू ने क्या किया ? कहने लगा कि मैं ने उन की आवाज़ तो सुनी मगर वोह मुझे नज़र ही नहीं आए। अब अबू जह्ल के दूसरे दोस्त ने दा'वा किया कि वोह इस काम को अन्जाम देगा और बड़े दा'वे के साथ वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ चला था कि उल्टे पाउं ऐसा बद ह़वास हो कर भागा कि औंधे मुंह गिर गया। उस के दोस्तों ने ह़ाल पूछा तो कहने लगा कि मेरा ह़ाल बहुत सख़्त है मैं ने एक बहुत बड़ा सांड देखा जो मेरे और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के दरमियान ह़ाइल हो गया, लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम अगर मैं ज़रा भी आगे बढ़ता तो वोह मुझे खा ही जाता, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (خازن وجمل) **8 :** येह भी तम्सील है कि जैसे किसी शख़्स के लिये दोनों त़रफ़ दीवारें हों और हर त़रफ़ से रास्ता बन्द कर दिया गया हो वोह किसी त़रह़ मन्ज़िले मक़्सूद तक नहीं पहुंच सकता येही ह़ाल उन कुफ़्फ़ार का है कि उन पर हर त़रफ़ से ईमान की राह बन्द है, सामने उन के ग़ुरूरे दुन्या (दुन्या के धोके) की दीवार है और उन के पीछे तक्ज़ीबे आख़िरत की और वोह जहालत के क़ैदख़ाने में मह़बूस हैं, आयात व दलाइल में नज़र करना उन्हें मुयस्सर नहीं। **9 :** या'नी आप के डर सुनाने और ख़ौफ़ दिलाने से वोही नफ़्अ़ उठाता है **10 :** या'नी जन्नत की। **11 :** या'नी दुन्या की ज़िन्दगानी में जो नेकी या बदी की ताकि उस पर जज़ा दी जाए। **12 :** या'नी और हम उन की वोह निशानियां वोह त़रीक़े भी लिखते हैं जो वोह अपने बा'द छोड़ गए ख़्वाह वोह त़रीक़े नेक हों या बद। जो नेक त़रीक़े उम्मती निकालते हैं उन को **बिद्अ़ते ह़सना** कहते हैं और इस त़रीक़े के निकालने वालों और अ़मल करने वालों दोनों को सवाब मिलता है और जो बुरे त़रीक़े निकालते हैं उन को **बिद्अ़ते सय्यिआ** कहते हैं इस त़रीक़े के निकालने वाले और अ़मल करने वाले दोनों गुनाहगार होते हैं। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने इस्लाम में नेक (अच्छा) त़रीक़ा निकाला उस को त़रीक़ा निकालने का भी सवाब मिलेगा और उस पर अ़मल करने वालों का भी सवाब बिग़ैर इस के कि अ़मल करने वालों के सवाब में कुछ कमी की जाए और जिस ने इस्लाम में बुरा त़रीक़ा निकाला तो उस पर वोह त़रीक़ा निकालने का भी गुनाह और उस त़रीक़े पर अ़मल करने वालों के भी गुनाह बिग़ैर इस के कि उन अ़मल करने वालों के गुनाहों में कुछ कमी की जाए। इस से मा'लूम हुवा कि सदहा उमूरे ख़ैर मिस्ले फ़ातिह़ा, ग्यारहवीं व तीजा व चालीसवां व उ़र्स व तोशा व ख़त्म व मह़ाफ़िले ज़िक्रे मीलाद व शहादत जिन को बद मज़्हब लोग बिद्अ़त कह कर मन्अ़ करते हैं और लोगों को इन नेकियों से रोकते हैं येह सब दुरुस्त और बाइ़से अज्रो सवाब हैं और इन को बिद्अ़ते सय्यिआ बताना ग़लत़ व बात़िल है, येह त़ाआ़त और आ'माले सालिह़ा जो ज़िक्रो तिलावत और सदक़ा व ख़ैरात पर मुश्तमिल हैं बिद्अ़ते सय्यिआ नहीं, बिद्अ़ते सय्यिआ वोह बुरे त़रीक़े हैं जिन से दीन को नुक़्सान पहुंचता है और जो सुन्नत के मुख़ालिफ़ हैं जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में आया कि जो क़ौम बिद्अ़त निकालती है उस से एक सुन्नत उठ जाती है तो बिद्अ़ते सय्यिआ वोही है जिस से सुन्नत उठती हो जैसे कि रिफ़्ज़, ख़ुरूज, वहाबिय्यत येह सब इन्तिहा दरजे की ख़राब सय्यिआ बिद्अ़तें हैं। रिफ़्ज़ व ख़ुरूज जो अस्ह़ाब व अहले बैते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़दावत पर मब्नी हैं, इन से अस्ह़ाब व अहले बैत के साथ मह़ब्बत व नियाज़ मन्दी रखने की सुन्नत उठ जाती है जिस के शरीअ़त में ताकीदी हुक्म हैं। वहाबिय्यत की अस्ल मक़्बूलाने ह़क़ ह़ज़राते अम्बिया व औलिया की जनाब में बे अदबी व गुस्ताख़ी और तमाम मुसल्मानों को मुश्रिक क़रार देना है, इस से बुज़ुर्गाने दीन की ह़ुरमत व इ़ज़्ज़त और अदबो तक्रीम और मुसल्मानों के साथ अख़ुव्वत व मह़ब्बत की सुन्नतें उठ जाती हैं जिन की बहुत शदीद ताकीदें हैं और जो दीन में बहुत ज़रूरी चीज़ें हैं। और इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि आसार से मुराद वोह क़दम हैं जो नमाज़ी मस्जिद की त़रफ़ चलने में रखता है और इस मा'ना पर आयत का **शाने नुज़ूल** येह बयान किया गया है कि बनी सलमा मदीनए त़य्यिबा के कनारे पर रहते थे, उन्हों ने चाहा कि मस्जिद शरीफ़ के क़रीब आ बसें, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम

www.dawateislami.net

مُّبِيْنٍ ﴿١٢﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٣﴾

वाली किताब में[13] और उन से मिसाल बयान करो उस शह्र वालों की[14] जब उन के पास फ़िरिस्तादे आए[15]

اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ

जब हम ने उन की त़रफ़ दो भेजे[16] फिर उन्हों ने उन को झुटलाया तो हम ने तीसरे से ज़ोर दिया[17] अब उन सब ने कहा[18] कि

اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ

बेशक हम तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं बोले तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी और रह़मान

الرَّحْمٰنُ مِنْ شَیْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ

ने कुछ नहीं उतारा तुम निरे झूटे हो वोह बोले हमारा रब जानता है कि बेशक ज़रूर

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम्हारे क़दम लिखे जाते हैं तुम मकान तब्दील न करो या'नी जितनी दूर से आओगे उतने ही क़दम ज़ियादा पड़ेंगे और अज्रो सवाब ज़ियादा होगा। **13 :** या'नी लौहे मह़फ़ूज़ में। **14 :** उस शह्र से मुराद अन्त़ाकिया है, येह एक बड़ा शह्र है, इस में चश्मे हैं, कई पहाड़ हैं, एक संगीन शह्र पनाह है, बारह मील के दौर में बसता है। **15 :** ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के वाक़िए का मुख़्तसर बयान येह है कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने दो ह़वारियों सादिक़ व सदूक़ को अन्त़ाकिया भेजा ताकि वहां के लोगों को जो बुत परस्त थे दीने ह़क़ की दा'वत दें, जब येह दोनों शह्र के क़रीब पहुंचे तो उन्हों ने एक बूढ़े शख़्स को देखा कि बकरियां चरा रहा है उस का नाम ह़बीब नज्जार था, उस ने उन का ह़ाल दरयाफ़्त किया, उन दोनों ने कहा कि हम ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के भेजे हुए हैं, तुम्हें दीने ह़क़ की दा'वत देने आए हैं कि बुत परस्ती छोड़ कर ख़ुदा परस्ती इख़्तियार करो। ह़बीब नज्जार ने निशानी दरयाफ़्त की। उन्हों ने कहा कि निशानी येह है कि हम बीमारों को अच्छा करते हैं, अन्धों को बीना करते हैं, बरस वाले का मरज़ दूर कर देते हैं। ह़बीब नज्जार का एक बेटा दो साल से बीमार था उन्हों ने उस पर हाथ फेरा और वोह तन्दुरुस्त हो गया, ह़बीब ईमान लाए और इस वाक़िए की ख़बर मश्हूर हो गई ता आंकि एक ख़ल्क़े कसीर ने उन के हाथों अपने अमराज़ से शिफ़ा पाई, येह ख़बर पहुंचने पर बादशाह ने उन्हें बुला कर कहा : क्या हमारे मा'बूदों के सिवा और कोई मा'बूद भी है? उन दोनों ने कहा : हां वोही जिस ने तुझे और तेरे मा'बूदों को पैदा किया, फिर लोग उन के दरपै हुए और उन्हें मारा और येह दोनों क़ैद कर लिये गए। फिर ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने शम्ऊन को भेजा वोह अजनबी बन कर शह्र में दाख़िल हुए और बादशाह के मुसाहिबीन व मुक़र्रबीन से रस्मो राह पैदा कर के बादशाह तक पहुंचे और उस पर अपना असर पैदा कर लिया, जब देखा कि बादशाह इन से ख़ूब मानूस हो गया है तो एक रोज़ बादशाह से ज़िक्र किया कि दो आदमी जो क़ैद किये गए हैं क्या उन की बात सुनी गई थी वोह क्या कहते थे? बादशाह ने कहा : नहीं जब उन्हों ने नए दीन का नाम लिया फ़ौरन ही मुझे ग़ुस्सा आ गया। शम्ऊन ने कहा कि अगर बादशाह की राय हो तो उन्हें बुलाया जाए देखें उन के पास क्या है। चुनान्चे वोह दोनों बुलाए गए। शम्ऊन ने उन से दरयाफ़्त किया तुम्हें किस ने भेजा है? उन्हों ने कहा कि उस **अल्लाह** ने जिस ने हर चीज़ को पैदा किया और हर जानदार को रोज़ी दी और जिस का कोई शरीक नहीं। शम्ऊन ने कहा कि उस की मुख़्तसर सिफ़त बयान करो। उन्हों ने कहा : वोह जो चाहता है करता है, जो चाहता है हुक्म देता है। शम्ऊन ने कहा : तुम्हारी निशानी क्या है? उन्हों ने कहा : जो बादशाह चाहे। तो बादशाह ने एक अन्धे लड़के को बुलाया, उन्हों ने दुआ की वोह फ़ौरन बीना हो गया। शम्ऊन ने बादशाह से कहा कि अब मुनासिब येह है कि तू अपने मा'बूदों से कह कि वोह भी ऐसा ही कर के दिखाएं ताकि तेरी और उन की इ़ज़्ज़त ज़ाहिर हो। बादशाह ने शम्ऊन से कहा कि तुम से कुछ छुपाने की बात नहीं है, हमारा मा'बूद न देखे न सुने न कुछ बिगाड़ सके, न बना सके फिर बादशाह ने उन दोनों ह़वारियों से कहा कि अगर तुम्हारे मा'बूद को मुर्दे के ज़िन्दा कर देने की क़ुदरत हो तो हम उस पर ईमान ले आएं। उन्हों ने कहा कि हमारा मा'बूद हर शै पर क़ादिर है। बादशाह ने एक दिहक़ान (दीहाती) के लड़के को मंगाया जिस को मरे हुए सात दिन हो गए थे और जिस्म ख़राब हो चुका था, बदबू फैल रही थी, उन की दुआ से **अल्लाह** तआ़ला ने उस को ज़िन्दा किया और उठ खड़ा हुवा और कहने लगा कि मैं मुशरिक मरा था, मुझ को जहन्नम की सात वादियों में दाख़िल किया गया, मैं तुम्हें आगाह करता हूं कि जिस दीन पर तुम हो बहुत नुक़्सान देह है, ईमान लाओ और कहने लगा कि आस्मान के दरवाज़े खुले और एक ह़सीन जवान मुझे नज़र आया जो इन तीनों शख़्सों की सिफ़ारिश करता है। बादशाह ने कहा : कौन तीन? उस ने कहा : एक शम्ऊन और दो येह। बादशाह को तअ़ज्जुब हुवा, जब शम्ऊन ने देखा कि उस की बात बादशाह में असर कर गई तो उस ने बादशाह को नसीह़त की, वोह ईमान लाया और उस की क़ौम के कुछ लोग ईमान लाए और कुछ ईमान न लाए और अ़ज़ाबे इलाही से हलाक किये गए। **16 :** या'नी दो ह़वारी। वह्ब ने कहा कि उन के नाम यूह़न्ना और बूलिस थे और का'ब का क़ौल है कि सादिक़ व सदूक़। **17 :** या'नी शम्ऊन से तक़्वियत और ताईद पहुंचाई। **18 :** या'नी तीनों फ़िरिस्तादों (क़ासिदों) ने।

اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ﴿١٦﴾ وَ مَا عَلَيْنَاۤ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٧﴾ قَالُوْۤا اِنَّا

हम तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं और हमारे ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना[19] बोले हम

تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَ لَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ

तुम्हें मन्हूस समझते हैं[20] बेशक तुम अगर बाज़ न आए[21] तो ज़रूर तुम्हें संगसार करेंगे बेशक हमारे हाथों तुम पर दुख की

اَلِيْمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوْا طَآىِٕرُكُمْ مَّعَكُمْ ؕ اَىِٕنْ ذُكِّرْتُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ

मार पड़ेगी उन्हों ने फ़रमाया तुम्हारी नुहूसत तो तुम्हारे साथ है[22] क्या इस पर बिदक्ते हो कि तुम समझाए गए[23] बल्कि तुम ह़द से

مُّسْرِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَ جَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ

बढ़ने वाले लोग हो[24] और शहर के परले कनारे से एक मर्द दौड़ता आया[25] बोला ऐ मेरी क़ौम

اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٠﴾ اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّ هُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢١﴾

भेजे हुओं की पैरवी करो ऐसों की पैरवी करो जो तुम से कुछ नेग (अज्र) नहीं मांगते और वोह राह पर हैं[26]

19 : अदिल्लए वाज़िह़ा के साथ और वोह अन्धों और बीमारों को अच्छा करना और मुर्दों को ज़िन्दा करना है। **20 :** जब से तुम आए हो बारिश ही नहीं हुई। **21 :** अपने दीन की तब्लीग़ से **22 :** या'नी तुम्हारा कुफ़्र **23 :** और तुम्हें इस्लाम की दा'वत दी गई **24 :** ज़लाल व तुग़्यान में और येही बड़ी नुहूसत है। **25 :** या'नी ह़बीब नज्जार जो पहाड़ के ग़ार में मसरूफ़े इ़बादते इलाही था, जब उस ने सुना कि क़ौम ने उन फ़िरिस्तादों (क़ासिदों) की तक्ज़ीब की। **26 :** ह़बीब नज्जार की येह गुफ़्तगू सुन कर क़ौम ने कहा कि क्या तू इन के दीन पर है और तू इन के मा'बूद पर ईमान ले आया ? इस के जवाब में ह़बीब नज्जार ने कहा।

I.T. Majlis of Dawateislami

وَمَالِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٢﴾ ءَاَتَّخِذُ مِنْ
और मुझे क्या है कि उस की बन्दगी न करूं जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की त़रफ़ तुम्हें पलटना है[27] क्या अल्लाह के सिवा
دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّ
और ख़ुदा ठहराऊं[28] कि अगर रह़मान मेरा कुछ बुरा चाहे तो उन की सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और
لَا يُنْقِذُوْنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّيْۤ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّيْۤ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ
न वोह मुझे बचा सकें बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूं[29] मुक़र्रर (यक़ीनन) मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया
فَاسْمَعُوْنِ ﴿٢٥﴾ قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا
तो मेरी सुनो[30] उस से फ़रमाया गया कि जन्नत में दाख़िल हो[31] कहा किसी त़रह़ मेरी क़ौम जानती जैसी
غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْۢ
मेरे रब ने मेरी मग़्फ़िरत की और मुझे इ़ज़्ज़त वालों में किया[32] और हम ने इस के बा'द उस की क़ौम पर
بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً
आस्मान से कोई लश्कर न उतारा[33] और न हमें वहां कोई लश्कर उतारना था वोह तो बस एक
وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾ يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ
ही चीख़ थी जभी वोह बुझ कर रह गए[34] और कहा गया कि हाए अफ़्सोस उन बन्दों पर[35] जब उन के पास कोई
رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ
रसूल आता है तो उस से ठठ्ठा ही करते हैं क्या उन्हों ने न देखा[36] हम ने उन से पहले कितनी संगतें

वقف غفران

27 : या'नी इब्तिदाए हस्ती से जिस की हम पर ने'मतें हैं और आख़िर कार भी उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करना है उस मालिके ह़क़ीक़ी की इ़बादत न करना क्या मा'ना ! और उस की निस्बत ए'तिराज़ कैसा ! हर शख़्स अपने वुजूद पर नज़र कर के उस के ह़क़्क़े ने'मत व एह़सान को पहचान सकता है। **28 :** या'नी क्या बुतों को मा'बूद बनाऊं **29 :** जब ह़बीब नज्जार ने अपनी क़ौम से ऐसा नसीह़त आमेज़ कलाम किया तो वोह लोग उन पर यक्बारगी टूट पड़े और उन पर पथराव शुरूअ़ किया और पाउं से कुचला यहां तक कि क़त्ल कर डाला, क़ब्र उन की अन्त़ाकिया में है। जब क़ौम ने उन पर ह़म्ला शुरूअ़ किया तो उन्हों ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़िरिस्तादों से बहुत जल्दी कर के येह कहा : **30 :** या'नी मेरे ईमान के शाहिद रहो ! जब वोह क़त्ल हो चुके तो ब त़रीक़े इक्राम **31 :** जब वोह जन्नत में दाख़िल हुए और वहां की ने'मतें देखीं **32 :** ह़बीब नज्जार ने येह तमन्ना की, कि उन की क़ौम को मा'लूम हो जाए कि अल्लाह तआ़ला ने ह़बीब की मग़्फ़िरत की और इक्राम फ़रमाया ताकि क़ौम को मुर्सलीन के दीन की त़रफ़ रग़बत हो। जब ह़बीब क़त्ल कर दिये गए तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का उस क़ौम पर ग़ज़ब हुवा और उन की उ़क़ूबत व सज़ा में ताख़ीर न फ़रमाई गई, ह़ज़रते जिब्रील को हुक्म हुवा और उन की एक ही होलनाक आवाज़ से सब के सब मर गए। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया जाता है : **33 :** उस क़ौम की हलाकत के लिये **34 :** फ़ना हो गए जैसे आग बुझ जाती है। **35 :** उन पर और उन की मिस्ल और सब पर जो रसूलों की तक्ज़ीब कर के हलाक हुए **36 :** या'नी अहले मक्का ने जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करते हैं कि।

الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَ اِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا

हलाक फ़रमाईं कि वोह अब उन की त़रफ़ पलटने वाले नहीं[37] और जितने भी हैं सब के सब हमारे हुज़ूर ह़ाज़िर

ع ۲ مُحْضَرُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَ اٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚۖ اَحْيَيْنٰهَا وَ اَخْرَجْنَا مِنْهَا

लाए जाएंगे[38] और उन के लिये एक निशानी मुर्दा ज़मीन है[39] हम ने उसे ज़िन्दा किया[40] और फिर उस से अनाज

حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ جَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ وَّ فَجَّرْنَا

निकाला तो उस में से खाते हैं और हम ने उस में[41] बाग़ बनाए खजूरों और अंगूरों के और हम ने

فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿۳۴﴾ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَ مَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا

उस में कुछ चश्मे बहाए कि उस के फलों में से खाएं और येह उन के हाथ के बनाए नहीं तो क्या

يَشْكُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ

ह़क़ न मानेंगे[42] पाकी है उसे जिस ने सब जोड़े बनाए[43] उन चीज़ों से जिन्हें ज़मीन उगाती है[44]

وَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ مِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَ اٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚۖ نَسْلَخُ مِنْهُ

और ख़ुद उन से[45] और उन चीज़ों से जिन की उन्हें ख़बर नहीं[46] और उन के लिये एक निशानी[47] रात है हम उस पर से दिन

النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ الشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ

खींच लेते हैं[48] जभी वोह अंधेरे में हैं और सूरज चलता है अपने एक ठहराव के लिये[49] येह

تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۳۸﴾ وَ الْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ

हुक्म है ज़बर दस्त इ़ल्म वाले का[50] और चांद के लिये हम ने मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं[51] यहां तक कि फिर हो गया जैसे खजूर की पुरानी

37 : या'नी दुन्या की त़रफ़ लौटने वाले नहीं। क्या येह लोग उन के ह़ाल से इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते। **38 :** या'नी तमाम उम्मतें रोज़े क़ियामत हमारे हुज़ूर ह़िसाब के लिये मौक़िफ़ में ह़ाज़िर की जाएंगी। **39 :** जो इस पर दलालत करती है कि **अल्लाह** तआला मुर्दा को ज़िन्दा फ़रमाएगा। **40 :** पानी बरसा कर **41 :** या'नी ज़मीन में **42 :** और **अल्लाह** तआला की ने'मतों का शुक्र बजा न लाएंगे। **43 :** या'नी अस्नाफ़ व अक़्साम। **44 :** ग़ल्ले फल वग़ैरा **45 :** औलादे ज़ुकूर व उनास (मुज़क्कर और मुअन्नस औलाद) **46 :** बहरो बर की अ़जीबो ग़रीब मख़्लूक़ात में से जिस की इन्सानों को ख़बर भी नहीं है। **47 :** हमारी क़ुदरते अ़ज़ीमा पर दलालत करने वाली। **48 :** तो बिल्कुल तारीक रह जाती है जिस त़रह़ काले भुजंगे (इन्तिहाई काले) ह़ब्शी का सफ़ेद लिबास उतार लिया जाए तो फिर वोह सियाह ही सियाह रह जाता है। इस से मा'लूम हुवा कि आस्मान व ज़मीन के दरमियान की फ़ज़ा अस्ल में तारीक है आफ़्ताब की रोशनी उस के लिये एक सफ़ेद लिबास की त़रह़ है, जब आफ़्ताब ग़ुरूब हो जाता है तो येह लिबास उतर जाता है और फ़ज़ा अपनी अस्ल ह़ालत में तारीक रह जाती है। **49 :** या'नी जहां तक उस की सैर की निहायत (ह़द) मुक़र्रर फ़रमाई गई है और वोह रोज़े क़ियामत है उस वक़्त तक वोह चलता ही रहेगा या येह मा'ना हैं कि वोह अपनी मन्ज़िलों में चलता है और जब सब से दूर वाले मग़रिब में पहुंचता है तो फिर लौट पड़ता है क्यूं कि येही उस का मुस्तक़र है। **50 :** और येह निशानी है जो उस की क़ुदरते कामिला और ह़िक्मते बालिग़ा पर दलालत करती है। **51 :** चांद की अठ्ठाईस मन्ज़िलें हैं, हर शब एक मन्ज़िल में होता है और पूरी मन्ज़िल तै कर लेता है, न कम चले न ज़ियादा, तुलूअ़ की तारीख़ से अठ्ठाईसवीं तारीख़ तक तमाम मन्ज़िलें तै कर लेता है और अगर महीना तीस का हो तो दो शब और उन्तीस हो तो एक शब छुपता है और जब अपने आख़िर मनाज़िल में पहुंचता है तो बारीक

www.dawateislami.net

الْقَدِیْمِ ﴿۳۹﴾ لَا الشَّمْسُ یَنْۢبَغِیْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَ لَا الَّیْلُ سَابِقُ

डाल (टहनी)[52] सूरज को नहीं पहुंचता कि चांद को पकड़ ले[53] और न रात दिन पर

النَّهَارِؕ وَ كُلٌّ فِیْ فَلَكٍ یَّسْبَحُوْنَ ﴿۴۰﴾ وَ اٰیَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّیَّتَهُمْ فِی

सब्क़त ले जाए[54] और हर एक एक घेरे में पेर रहा है और उन के लिये एक निशानी येह है कि उन्हें उन के बुज़ुर्गों की पीठ में हम

الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِۙ ﴿۴۱﴾ وَ خَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا یَرْكَبُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَ اِنْ نَّشَاْ

ने भरी कश्ती में सुवार किया[55] और उन के लिये वैसी ही कश्तियां बना दीं जिन पर सुवार होते हैं और हम चाहें तो

نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِیْخَ لَهُمْ وَ لَا هُمْ یُنْقَذُوْنَۙ ﴿۴۳﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَ مَتَاعًا

उन्हें डुबो दें[56] तो न कोई उन की फ़रियाद को पहुंचने वाला हो और न वोह बचाए जाएं मगर हमारी त़रफ़ की रह़मत और एक वक़्त

اِلٰى حِیْنٍ ﴿۴۴﴾ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَیْنَ اَیْدِیْكُمْ وَ مَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ

तक बरत्ने देना[57] और जब उन से फ़रमाया जाता है डरो तुम उस से जो तुम्हारे सामने है[58] और जो तुम्हारे पीछे आने वाला है[59] इस उम्मीद पर

تُرْحَمُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَ مَا تَاْتِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ مِّنْ اٰیٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا

कि तुम पर मेहर हो तो मुंह फेर लेते हैं और जब कभी उन के रब की निशानियों से कोई निशानी उन के पास आती है तो मुंह

مُعْرِضِیْنَ ﴿۴۶﴾ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُۙ قَالَ الَّذِیْنَ

ही फेर लेते हैं[60] और जब उन से फ़रमाया जाए अल्लाह के दिये में से कुछ उस की राह में ख़र्च करो तो काफ़िर

كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ یَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗۤ ﳓ اِنْ اَنْتُمْ

मुसल्मानों के लिये कहते हैं कि क्या हम उसे खिलाएं जिसे अल्लाह चाहता तो खिला देता[61] तुम तो नहीं

और कमान की त़रह़ ख़मीदा और ज़र्द हो जाता है। **52 :** जो सूख कर पतली और ख़मीदा और ज़र्द हो गई हो। **53 :** या'नी शब में जो उस के ज़ुहूरे शौकत का वक़्त है उस के साथ जम्अ़ हो कर उस के नूर को मग़्लूब करे, क्यूं कि सूरज और चांद में से हर एक के ज़ुहूरे शौकत के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है, सूरज के लिये दिन और चांद के लिये रात। **54 :** कि दिन का वक़्त पूरा होने से पहले आ जाए। ऐसा भी नहीं बल्कि रात और दिन दोनों मुअ़य्यन ह़िसाब के साथ आते जाते हैं, कोई उन में से अपने वक़्त से क़ब्ल नहीं आता और नय्यरैन या'नी आफ़्ताब व महताब में से कोई दूसरे के ह़ुदूदे शौकत में दाख़िल नहीं होता, न आफ़्ताब रात में चमके न माहताब दिन में। **55 :** जो सामाने अस्बाब वग़ैरा से भरी हुई थी। मुराद इस से कश्तिये नूह़ है जिस में उन के पहले अज्दाद सुवार किये गए थे और येह उन की ज़ुर्रिय्यतें उन की पुश्त में थीं। **56 :** बा वुजूद कश्तियों के **57 :** जो उन की ज़िन्दगानी के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है। **58 :** या'नी अ़ज़ाबे दुन्या **59 :** या'नी अ़ज़ाबे आख़िरत **60 :** या'नी उन का दस्तूर और त़रीक़ए कार ही येह है कि वोह हर आयत व मौइ़ज़त से ए'राज़ व रूगर्दानी किया करते हैं। **61 : शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन से मुसल्मानों ने कहा था कि तुम अपने मालों का वोह ह़िस्सा मिस्कीनों पर ख़र्च करो जो तुम ने ब ज़ो'मे ख़ुद अल्लाह तआ़ला के लिये निकाला है। इस पर उन्हों ने कहा कि क्या हम उन को खिलाएं जिन्हें अल्लाह तआ़ला खिलाना चाहता तो खिला देता, मत़लब येह था कि ख़ुदा ही को मिस्कीनों का मोह़ताज रखना मन्ज़ूर है तो उन्हें खाने को देना उस की मशिय्यत के ख़िलाफ़ होगा। येह बात उन्हों ने बख़ीली और कन्जूसी से बत़ौर तमस्ख़ुर के कही थी और निहायत बात़िल थी क्यूं कि दुन्या ''दारुल इम्तिह़ान'' (इम्तिह़ान की जगह) है। फ़क़ीरी और अमीरी दोनों आज़्माइशें हैं : फ़क़ीर की आज़्माइश सब्र से और ग़नी की

www.dawateislami.net

إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

मगर खुली गुमराही में और कहते हैं कब आएगा येह वा'दा[62] अगर तुम सच्चे हो[63]

مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾ فَلَا

राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की[64] कि उन्हें आ लेगी जब वोह दुन्या के झगड़े में फंसे होंगे[65] तो न

يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ

वसिय्यत कर सकेंगे और न अपने घर पलट कर जाएं[66] और फूंका जाएगा सूर[67]

فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ﴿٥١﴾ قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن

जभी वोह क़ब्रों से[68] अपने रब की त़रफ़ दौड़ते चलेंगे कहेंगे हाए हमारी ख़राबी किस ने

بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾

हमें सोते से जगा दिया[69] येह है वोह जिस का रह़मान ने वा'दा दिया था और रसूलों ने ह़क़ फ़रमाया[70]

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

वोह तो न होगी मगर एक चिंघाड़[71] जभी वोह सब के सब हमारे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हो जाएंगे[72]

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

तो आज किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और तुम्हें बदला न मिलेगा मगर अपने किये का

"इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह" (राहे ख़ुदा में ख़र्च करने) से। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि मक्कए मुकर्रमा में ज़िन्दीक़ लोग थे जब उन से कहा जाता था कि मिस्कीनों को सदक़ा दो तो कहते थे हरगिज़ नहीं येह कैसे हो सकता है कि जिस को अल्लाह तआ़ला मोह़ताज करे हम खिलाएं। **62 :** बअ़्स व क़ियामत का **63 :** अपने दा'वे में। इन का येह ख़ित़ाब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब से था। अल्लाह तआ़ला इन के ह़क़ में फ़रमाता है : **64 :** या'नी सूर के पहले नफ़्ख़े की जो ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام फूंकेंगे। **65 :** ख़रीदो फ़रोख़्त में और खाने पीने में और बाज़ारों और मजलिसों में, दुन्या के कामों में कि अचानक क़ियामत क़ाइम हो जाएगी। ह़दीस शरीफ़ में है नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ख़रीदार और बाएअ़ के दरमियान कपड़ा फैला होगा न सौदा तमाम होने पाएगा न कपड़ा लिपट सकेगा कि क़ियामत क़ाइम हो जाएगी या'नी लोग अपने अपने कामों में मश्ग़ूल होंगे और वोह काम वैसे ही ना तमाम रह जाएंगे, न उन्हें ख़ुद पूरा कर सकेंगे न किसी दूसरे से पूरा करने को कह सकेंगे और जो घर से बाहर गए हैं वोह वापस न आ सकेंगे। चुनान्चे इर्शाद होता है : **66 :** वहीं मर जाएंगे और क़ियामत फ़ुरसत व मोहलत न देगी। **67 :** दूसरी मरतबा। येह नफ़्ख़ए सानिया है जो मुर्दों के उठाने के लिये होगा और उन दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान चालीस साल का फ़ासिला होगा। **68 :** ज़िन्दा हो कर **69 :** येह मक़ूला कुफ़्फ़ार का होगा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि वोह येह बात इस लिये कहेंगे कि अल्लाह तआ़ला दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान उन से अ़ज़ाब उठा देगा और इतना ज़माना वोह सोते रहेंगे और नफ़्ख़ए सानिया के बा'द जब उठाए जाएंगे और अह़वाले क़ियामत देखेंगे तो इस त़रह़ चीख़ उठेंगे और येह भी कहा गया है कि जब कुफ़्फ़ार जहन्नम और उस के अ़ज़ाब देखेंगे तो उस के मुक़ाबले में अ़ज़ाबे क़ब्र उन्हें सहल मा'लूम होगा इस लिये वोह वैल (हाए हमारी ख़राबी) व अफ़्सोस पुकार उठेंगे और उस वक़्त कहेंगे : **70 :** और उस वक़्त का इक़रार उन्हें कुछ नाफ़ेअ़ न होगा। **71 :** या'नी "नफ़्ख़ए अख़ीरा" एक होलनाक आवाज़ होगी। **72 :** ह़िसाब के लिये। फिर उन से कहा जाएगा।

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿۵۵﴾ ج هُمْ وَ اَزْوَاجُهُمْ فِيْ

बेशक जन्नत वाले आज दिल के बहलावों में चैन करते हैं[73] वोह और उन की बीबियां

ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿۵۶﴾ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّ لَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿۵۷﴾ ج

सायों में हैं तख़्तों पर तक्या लगाए उन के लिये उस में मेवा है और उन के लिये है उस में जो मांगें

سَلٰمٌ قف قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿۵۸﴾ وَ امْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۵۹﴾

उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुवा[74] और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो[75]

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ج اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ

ऐ औलादे आदम क्या मैं ने तुम से अ़हद न लिया था[76] कि शैत़ान को न पूजना[77] बेशक वोह तुम्हारा खुला

مُّبِيْنٌ ﴿۶۰﴾ لا وَّ اَنِ اعْبُدُوْنِيْ ط هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۶۱﴾ وَ لَقَدْ اَضَلَّ وقف غفران

दुश्मन है और मेरी बन्दगी करना[78] येह सीधी राह है और बेशक उस ने तुम में

مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ط اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۲﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ

से बहुत सी ख़ल्क़त को बहका दिया तो क्या तुम्हें अ़क़्ल न थी[79] येह है वोह जहन्नम जिस का तुम से

تُوْعَدُوْنَ ﴿۶۳﴾ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۶۴﴾ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى

वा'दा था आज इस में जाओ बदला अपने कुफ़्र का आज हम उन के मूंहों पर मोहर

اَفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَاۤ اَيْدِيْهِمْ وَ تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۶۵﴾

कर देंगे[80] और उन के हाथ हम से बात करेंगे और उन के पाउं उन के किये की गवाही देंगे[81]

وَ لَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰۤى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿۶۶﴾ وَ

और अगर हम चाहते तो उन की आंखें मिटा देते[82] फिर लपक कर रस्ते की त़रफ़ जाते तो उन्हें कुछ न सूझता[83] और

73 : त़रह़ त़रह़ की ने'मतें और क़िस्म क़िस्म के सुरूर और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से ज़ियाफ़त, जन्नती नहरों के कनारे बिहिश्ती अश्जार की दिल नवाज़ फ़ज़ाएं, त़रब अंगेज़ नग़मात, ह़सीनाने जन्नत का क़ुर्ब और क़िस्म क़िस्म की ने'मतों से इल्तिज़ाज़ (लज़्ज़त ह़ासिल करना) येह उन के शग़्ल होंगे। **74 :** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर सलाम फ़रमाएगा ख़्वाह ब वासित़ा या बे वासित़ा और येह सब से बड़ी और प्यारी मुराद है, मलाएका अहले जन्नत के पास हर दरवाज़े से आ कर कहेंगे तुम पर तुम्हारे रह़मत वाले रब का सलाम। **75 :** जिस वक़्त मोमिन जन्नत की त़रफ़ रवाना किये जाएंगे उस वक़्त कुफ़्फ़ार से कहा जाएगा कि अलग फट जाओ मोमिनीन से अ़लाह़दा हो जाओ और एक क़ौल येह भी है कि येह हुक्म कुफ़्फ़ार को होगा कि अलग अलग जहन्नम में अपने अपने मक़ाम पर जाएं। **76 :** अपने अम्बिया की मा'रिफ़त **77 :** उस की फ़रमां बरदारी न करना। **78 :** और किसी को इ़बादत में मेरा शरीक न करना। **79 :** कि तुम उस की अ़दावत और गुमराह गरी को समझते और जब वोह जहन्नम के क़रीब पहुंचेंगे तो उन से कहा जाएगा : **80 :** कि वोह बोल न सकें और येह मोहर करना उन के येह कहने के सबब होगा कि हम मुश्रिक न थे, न हम ने रसूलों को झुटलाया। **81 :** उन के आ'ज़ा बोल उठेंगे और जो कुछ उन से सादिर हुवा है सब बयान कर देंगे। **82 :** कि निशान भी बाक़ी

www.dawateislami.net

لَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِیًّا وَّ لَا یَرْجِعُوْنَ ﴿۶۷﴾

अगर हम चाहते तो उन के घर बैठे उन की सूरतें बदल देते[84] कि न आगे बढ़ सकते न पीछे लौटते[85]

وَ مَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِی الْخَلْقِؕ اَفَلَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَ مَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَ

और जिसे हम बड़ी उ़म्र का करें उसे पैदाइश में उलटा फेरें[86] तो क्या वोह समझते नहीं[87] और हम ने उन को शे'र कहना न सिखाया[88] और

مَا یَنْۢبَغِیْ لَهٗؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّ قُرْاٰنٌ مُّبِیْنٌ ﴿۶۹﴾ لِّیُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَیًّا

न वोह उन की शान के लाइक़ है वोह तो नहीं मगर नसीह़त और रोशन क़ुरआन[89] कि उसे डराए जो ज़िन्दा हो[90]

وَّ یَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِیْنَ ﴿۷۰﴾ اَوَ لَمْ یَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ

और काफ़िरों पर बात साबित हो जाए[91] और क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने अपने हाथ के

اَیْدِیْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿۷۱﴾ وَ ذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَ

बनाए हुए चौपाए उन के लिये पैदा किये तो येह उन के मालिक हैं और उन्हें उन के लिये नर्म कर दिया[92] तो किसी पर सुवार होते हैं और

न रहता, इस त़रह़ का अन्धा कर देते। **83 :** लेकिन हम ने ऐसा न किया और अपने फ़ज़्लो करम से "ने'मते बसर" उन के पास बाक़ी रखी तो अब उन पर ह़क़ येह है कि वोह शुक्र गुज़ारी करें कुफ़्र न करें। **84 :** और उन्हें बन्दर या सुवर बना देते **85 :** और उन के जुर्म इस के मुस्तह़िक़ थे लेकिन हम ने अपनी रह़मत व ह़िक्मत के ह़स्बे इक़्तिज़ा अ़ज़ाब में जल्दी न की और उन के लिये मोहलत रखी। **86 :** कि वोह बचपन के से ज़ो'फ़ व नातुवानी की त़रफ़ वापस होने लगे और दम बदम इस की त़ाक़तें क़ुव्वतें और जिस्म और अ़क़्ल घटने लगे। **87 :** कि जो अह़वाल के बदलने पर ऐसा क़ादिर हो कि बचपन के ज़ो'फ़ व नातुवानी और सिग़रे जिस्म व नादानी के बा'द शबाब की क़ुव्वतें व तुवानाई और जिस्मे क़वी व दानाई अ़त़ा फ़रमाता है और फिर किब्र सिन और आख़िर उ़म्र में इसी क़वी हैकल जवान को दुबला और ह़क़ीर कर देता है, अब न वोह जिस्म बाक़ी है न क़ुव्वतें, निशस्त बरख़ास्त में मजबूरियां दरपेश हैं, अ़क़्ल काम नहीं करती, बात याद नहीं रहती, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को पहचान नहीं सकता, जिस परवर्दगार ने येह तग़य्युर किया वोह क़ादिर है कि आंखें देने के बा'द उन्हें मिटा दे और अच्छी सूरतें अ़त़ा करने के बा'द उन को मस्ख़ कर दे और मौत देने के बा'द फिर ज़िन्दा कर दे। **88 :** मा'ना येह हैं कि हम ने आप को शे'रगोई का मलका न दिया या येह कि क़ुरआन ता'लीमे शे'र नहीं है और शे'र से कलामे काज़िब मुराद है ख़्वाह मौज़ूं हो या ग़ैर मौज़ूं। इस आयत में इशारा है कि ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से उ़लूमे अव्वलीन व आख़िरीन ता'लीम फ़रमाए गए जिन से कश्फ़े ह़क़ाइक़ होता है और आप की मा'लूमात वाक़ेई व नफ़्सुल अम्री हैं, किज़्बे शे'री नहीं जो ह़क़ीक़त में जह्ल है वोह आप की शान के लाइक़ नहीं और आप का दामने तक़द्दुस इस से पाक है। इस में शे'र ब मा'ना कलामे मौज़ूं के जानने और इस के सह़ीह़ व सक़ीम जय्यद व रदी को पहचानने की नफ़ी नहीं। इ़ल्मे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم में त़ा'न करने वालों के लिये येह आयत किसी त़रह़ सनद नहीं हो सकती **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ुज़ूर को उ़लूमे काएनात अ़त़ा फ़रमाए। इस के इन्कार में इस आयत को पेश करना मह़ज़ ग़लत़ है। **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने कहा था कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) शाइ़र हैं और जो वोह फ़रमाते हैं या'नी क़ुरआने पाक वोह शे'र है। इस से उन की मुराद येह थी कि (مَعَاذَ الله) येह कलाम काज़िब है जैसा कि क़ुरआने करीम में उन का मक़ूला नक़्ल फ़रमाया गया है بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ। इसी का इस आयत में रद फ़रमाया गया कि हम ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ऐसी बात़िल गोई का मलका ही नहीं दिया और येह किताब अश्आ़र या'नी अकाज़ीब पर मुश्तमिल नहीं। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ज़बान से ऐसे बदज़ौक़ और नज़्मे अ़रूज़ी से ऐसे ना वाक़िफ़ न थे कि नस्र को नज़्म कह देते और कलामे पाक को शे'रे अ़रूज़ी बता बैठते और कलाम का मह़ज़ वज़्ने अ़रूज़ी पर होना ऐसा भी न था कि इस पर ए'तिराज़ किया जा सके। इस से साबित हो गया कि उन बे दीनों की मुराद शे'र से कलामे काज़िब थी। (مدارک وجمل وروح البیان) और ह़ज़रत शैख़े अक्बर قُدِّسَ سِرُّهٗ ने इस आयत के मा'ना में फ़रमाया है कि मा'ना येह हैं कि हम ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुअ़म्मे और इज्माल के साथ ख़ित़ाब नहीं फ़रमाया जिस में मुराद के मख़्फ़ी रहने का एह़तिमाल हो बल्कि साफ़ सरीह़ कलाम फ़रमाया है जिस से तमाम ह़िजाब उठ जाएं और उ़लूम रोशन हो जाएं, चूंकि शे'र लुग़ज़ व तोरिया और रम्ज़ व इज्माल का मह़ल होता है इस लिये शे'र की नफ़ी फ़रमा कर इस मा'ना को बयान फ़रमा दिया। **89 :** साफ़ सरीह़ ह़क़ व हिदायत। कहां वोह पाक आस्मानी किताब तमाम उ़लूम की जामेअ़ और कहां शे'र जैसा कलामे काज़िब چہ نسبت خاک را با عالم پاک (घटिया को आ'ला से क्या निस्बत ?) (الكبريت الاحمر للشيخ الاكبر) **90 :** दिल ज़िन्दा रखता हो कलाम व ख़ित़ाब को समझे और येह शान मोमिन की है। **91 :** या'नी ह़ुज्जते अ़ज़ाब क़ाइम हो जाए। **92 :** या'नी मुसख़्ख़र व ज़ेरे ह़ुक्म कर दिया।

www.dawateislami.net

مِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾ وَ

किसी को खाते हैं और उन के लिये उन में कई तरह के नफ़्अ़[93] और पीने की चीज़ें हैं[94] तो क्या शुक्र न करेंगे[95] और

اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۷۴﴾ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ

उन्हों ने **अल्लाह** के सिवा और ख़ुदा ठहरा लिये[96] कि शायद उन की मदद हो[97] वोह उन की मदद नहीं कर सकते[98]

وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ

وقف لازم

और वोह उन के लश्कर सब गिरिफ़्तार हाज़िर आएंगे[99] तो तुम उन की बात का ग़म न करो[100] बेशक हम जानते हैं जो वोह छुपाते हैं

وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۷۶﴾ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ

और ज़ाहिर करते हैं[101] और क्या आदमी ने न देखा कि हम ने उसे पानी की बूंद से बनाया जभी वोह सरीह़

مُّبِيْنٌ ﴿۷۷﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَ

झगड़ालू है[102] और हमारे लिये कहावत कहता है[103] और अपनी पैदाइश भूल गया[104] बोला ऐसा कौन है कि हड्डियों को ज़िन्दा करे

هِيَ رَمِيْمٌ ﴿۷۸﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْۤ اَنْشَاَهَاۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ

जब वोह बिल्कुल गल गईं तुम फ़रमाओ उन्हें वोह ज़िन्दा करेगा जिस ने पहली बार उन्हें बनाया और उसे हर पैदाइश

عَلِيْمُ ﴿۷۹﴾ۙ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَاۤ اَنْتُمْ مِّنْهُ

का इल्म है[105] जिस ने तुम्हारे लिये हरे पेड़ में से आग पैदा की जभी तुम उस से

93 : और फ़ाएदे हैं कि उन की खालों बालों और ऊन वग़ैरा काम में लाते हैं। **94 :** दूध और दूध से बनने वाली चीज़ें दही मठ्ठा वग़ैरा। **95 : अल्लाह** तआ़ला की इन ने'मतों का। **96 :** या'नी बुतों को पूजने लगे **97 :** और मुसीबत के वक़्त काम आएं और अ़ज़ाब से बचाएं और ऐसा मुम्किन नहीं। **98 :** क्यूं कि जमाद बेजान बे क़ुदरत बे शुऊ़र हैं। **99 :** या'नी काफ़िरों के साथ उन के बुत भी गिरिफ़्तार कर के ह़ाज़िर किये जाएंगे और सब जहन्नम में दाख़िल होंगे बुत भी और उन के पुजारी भी। **100 :** येह ख़िताब है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को। **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली फ़रमाता है कि कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब व इन्कार से और उन की ईज़ाओं और जफ़ाकारियों से आप ग़मगीन न हों। **101 :** हम उन्हें उन के किरदार की जज़ा देंगे। **102 शाने नुज़ूल :** येह आयत आ़स बिन वाइल या अबू जहल और बक़ौले मश्हूर उबय बिन ख़लफ़ जुमह़ी के ह़क़ में नाज़िल हुई जो इन्कारे बअ़्स में या'नी मरने के बा'द उठने के इन्कार में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से बह़्स व तकरार करने आया था, उस के हाथ में एक गली हुई हड्डी थी, उस को तोड़ता जाता था और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहता जाता था कि क्या आप का ख़याल है कि इस हड्डी को गल जाने और रेज़ा रेज़ा हो जाने के बा'द भी **अल्लाह** तआ़ला ज़िन्दा करेगा? हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : हां और तुझे भी मरने के बा'द उठाएगा और जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उस के जहल का इज़्हार फ़रमाया गया कि गली हुई हड्डी का बिखरने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत से ज़िन्दगी क़बूल करना अपनी नादानी से ना मुम्किन समझता है, कितना अह़मक़ है, अपने आप को नहीं देखता कि इब्तिदा में एक गन्दा नुत़्फ़ा था गली हुई हड्डी से भी ह़क़ीर तर **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरते कामिला ने उस में जान डाली, इन्सान बनाया तो ऐसा मग़रूर व मुतकब्बिर इन्सान हुवा कि उस की क़ुदरत ही का मुन्किर हो कर झगड़ने आ गया, इतना नहीं देखता कि जो क़ादिरे बरह़क़ पानी की बूंद को क़वी और तुवाना इन्सान बना देता है उस की क़ुदरत से गली हुई हड्डी को दोबारा ज़िन्दगी बख़्श देना क्या बईद है और इस को ना मुम्किन समझना कितनी खुली हुई जहालत है। **103 :** या'नी गली हुई हड्डी को हाथ से मल कर मसल बनाता है कि येह तो ऐसी बिखर गई कैसे ज़िन्दा होगी। **104 :** कि क़त़्रए मनी से पैदा किया गया है। **105 :** पहली का भी और मौत के बा'द वाली का भी।

www.dawateislami.net

تُوْقِدُوْنَ ﴿۸۰﴾ اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى

सुलगाते हो[106] और क्या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए उन जैसे

اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰى ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۱﴾ اِنَّمَاۤ اَمْرُهٗۤ اِذَاۤ

और नहीं बना सकता[107] क्यूं नहीं[108] और वोही है बड़ा पैदा करने वाला सब कुछ जानता उस का काम तो येही है कि जब

وقف غفران

اَرَادَ شَيْئًا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۸۲﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ

किसी चीज़ को चाहे[109] तो उस से फ़रमाए हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है[110] तो पाकी है उसे जिस के हाथ

مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۳﴾ ع

हर चीज़ का क़ब्ज़ा है और उसी की तरफ़ फेरे जाओगे[111]

ع ۵

اٰياتها ۱۸۲ ﴿۳۷ سُوْرَةُ الصّٰٓفّٰتِ مَكِّيَّةٌ ۵۶﴾ رکوعاتها ۵

सूरए صٰٓفّٰت मक्किय्या है, इस में एक सो बियासी आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ﴿۱﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ﴿۲﴾ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۙ﴿۳﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمْ

क़सम उन की कि बा क़ाइदा सफ़ बांधें[2] फिर उन की कि झिड़क कर चलाएं[3] फिर उन जमाअ़तों की कि क़ुरआन पढ़ें बेशक तुम्हारा मा'बूद

لَوَاحِدٌ ؕ﴿۴﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ؕ﴿۵﴾

ज़रूर एक है मालिक आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है और मालिक मशरिक़ों का[4]

106 : अ़रब के दो दरख़्त होते हैं जो वहां के जंगलों में कसरत से पाए जाते हैं, एक का नाम मर्ख़ है दूसरे का अ़फ़ार। उन की ख़ासिय्यत येह है कि जब उन की सब्ज़ शाखें काट कर एक दूसरे पर रगड़ी जाएं तो उन से आग निकलती है, बा वुजूदे कि वोह इतनी तर होती हैं कि उन से पानी टपक्ता होता है, इस में क़ुदरत की कैसी अ़जीबो ग़रीब निशानी है कि आग और पानी दोनों एक दूसरे की ज़िद, हर एक एक जगह एक लकड़ी में मौजूद, न पानी आग को बुझाए न आग लकड़ी को जलाए, जिस क़ादिरे मुत़्लक़ की येह ह़िक्मत है वोह अगर एक बदन पर मौत के बा'द ज़िन्दगी वारिद करे तो उस की क़ुदरत से क्या अ़जीब और इस को ना मुम्किन कहना आसारे क़ुदरत देख कर जाहिलाना व मुआ़निदाना इन्कार करना है। **107 :** या उन्हीं को बा'दे मौत ज़िन्दा नहीं कर सकता ? **108 :** बेशक वोह इस पर क़ादिर है। **109 :** कि पैदा करे **110 :** या'नी मख़्लूक़ात का वुजूद उस के हुक्म के ताबेअ़ है। **111 :** आख़िरत में। **1 :** सूरए وَالصّٰٓفّٰت मक्किय्या है, इस में पांच रुकूअ़, एक सो बियासी आयतें और आठ सो साठ कलिमे और तीन हज़ार आठ सो छब्बीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** इस आयत में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने क़सम याद फ़रमाई चन्द गुरौहों की या तो मुराद इस से मलाएका के गुरौह हैं जो नमाज़ियों की त़रह़ सफ़ बस्ता हो कर उस के हुक्म के मुन्तज़िर रहते हैं या उ़लमाए दीन के गुरौह जो तहज्जुद और तमाम नमाज़ों में सफ़ें बांध कर मसरूफ़े इ़बादत रहते हैं या ग़ाज़ियों के गुरौह जो राहे ख़ुदा में सफ़ें बांध कर दुश्मनाने ह़क़ के मुक़ाबिल होते हैं। (مدارک) **3 :** पहली तक़्दीर पर झिड़क कर चलाने वालों से मुराद मलाएका हैं जो अब्र पर मुक़र्रर हैं और उस को हुक्म दे कर चलाते हैं और दूसरी तक़्दीर पर वोह उ़लमा जो वा'ज़ व पन्द से लोगों को झिड़क कर दीन की राह चलाते हैं, तीसरी सूरत में वोह ग़ाज़ी जो घोड़ों को डपट कर जिहाद में चलाते हैं। **4 :** या'नी आस्मान और ज़मीन और इन की दरमियानी काएनात और